

अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

स्वाध्याय, सेवा और अनाहार रूपी तपस्या से कर्मों की हो सकती है निर्जरा

-पर्युषण पर्वाधिराज का सातवां दिवस 'ध्यान दिवस' के रूप में समायोजित

-'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' का क्रम भी रहा जारी

-आचार्यश्री ने लोगों को बताई ध्यान की अनेक मुद्राएं

-तपस्या करने वालों की लगी लाईन, बाल, वृद्ध, युवक, महिला सभी तपस्या में शामिल

13.09.2018 माधावरम, चेन्नई (तमिलनाडु): तपः समाधि के द्वारा साधु समाधिस्थ रह सकता है। तपस्या में बहुत गुण होता है। तपस्या केवल निर्जरा की भावना की जानी चाहिए। तपस्या में भौतिक चीजों की कामना नहीं करने का प्रयास करना चाहिए। वर्तमान में लोग अनाहार (आहार का त्याग) को ही तपस्या कहते हैं। तपस्या अकाम भाव से अर्थात् केवल निर्जरा के लिए करने का प्रयास करना चाहिए, मन में किसी तरह की कामना से बचने का प्रयास करना चाहिए। साधु को तो अपने जीवन में निर्जरा का एक काम हमेशा अपने जीवन में रखने का प्रयास करना चाहिए। निर्जरा के मुख्यतः तीन माध्यम बताए गए हैं-स्वाध्याय, सेवा और अनाहार की तपस्या। साधु को इनमें से कोई न कोई हमेशा अपने पास रखने का प्रयास करना चाहिए। तीनों में से किसी को भी अपना मुख्य माध्यम बनाकर कर्मों की निर्जरा कर आत्मा को निर्मल बनाने का प्रयास करना चाहिए। उक्त पावन प्रेरणा जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान अनुशास्ता भगवान महावीर के प्रतिनिधि अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने गुरुवार को 'महाश्रमण समवसरण' में उपस्थित हजारों श्रद्धालुओं को प्रदान की।

पर्युषण पर्वाधिराज का सातवां दिवस 'ध्यान दिवस' के रूप में समायोजित था। नित्य की भांति प्रातः से ही आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के पश्चात् जब निर्धारित समय पर महातपस्वी शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी प्रवचन पंडाल में पधारे तो मानों पूरा वातावरण जयनिनादों से गुंजायमान हो उठा। आगमन के साथ ही मुख्यमुनिश्री महावीकुमारजी ने 'सुरंगों शील सजो' गीत का सुमधुर संगान किया। उसके उपरान्त आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' के 25वें भव राजर्षि नन्दन के भव का वर्णन करते हुए कहा कि एक समय ऐसा आया जब राजा नंदन राजर्षि नंदन बन गए। अपने जीवन के अंतिम समय अर्थात् एक लाख वर्षों तक निरंतर मासखमण तप किया और इस तरह उन्होंने 11 लाख 60 हजार मासखमण तप कर लिए। आयुष्य पूर्ण कर वे दसवें देवलोक में पैदा हुए।

आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि समयानुसार आदमी को कर्म निर्जरा के प्रकार को चुनाव कर अपनी आत्मा का कल्याण करने का प्रयास करना चाहिए। युवावस्था अथवा किशोरावस्था हो, शरीर स्वस्थ हो और प्रतिभा तो स्वाध्याय में समय लगाने का प्रयास करना चाहिए। स्वाध्याय में जितना हो सके आगम का अध्ययन करने का प्रयास करना चाहिए। स्वाध्याय में मन न रमे तो सेवा करने का प्रयास करना चाहिए तथा उम्र के एक पड़ाव के बाद तपस्या पर ध्यान देना चाहिए। इन तीनों माध्यम से आदमी कर्म बंधनों से मुक्त हो सकता है और अपनी आत्मा का कल्याण कर सकता है।

'ध्यान दिवस' पर आचार्यश्री ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि ध्यान एक ऐसी साधना है जिसके माध्यम से संयम और संव पुष्ट हो सकता है। आचार्यश्री ने मन, वचन और काया को स्थिर रखकर ध्यान करने की प्रेरणा के साथ ध्यान की कई मुद्राओं को बताया और ध्यान का अभ्यास भी कराया। कार्यक्रम के अंत में दर्जनों की संख्या में बाल, किशोर, युवा, प्रौढ़ व वृद्ध महिला-पुरुषों ने आचार्यश्री के समक्ष अपनी-अपनी धारणा के अनुसार अपनी तपस्याओं का प्रत्याख्यान कर आचार्यश्री से पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।